IMPACT FACTOR 5.397 (SJIF USA)
BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 3, Issue 4, October-December, 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
ISSN : 3048-6971

# जयपाल सिंह मुण्डा : जीवन एवं दर्शन

**अविनाश कुमार**
**शोधार्थी**
स्नातकोत्तर इतिहास विभाग
बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय
धनबाद (झारखण्ड)
सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग,
डिग्री कॉलेज टुण्डी, धनबाद
**शोध निदेशक**
**डॉ. कौशल कुमार**
**सह प्राध्यापक**
(सामाजिक विज्ञान संकाय)
बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय
धनबाद (झारखण्ड)

**सारांश :**
जयपाल सिंह मुण्डा झारखण्ड के इतिहास में एक ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व के रूप में प्रतिष्ठित हैं, जिनके जीवन, विचार और संघर्ष ने राज्य के नवनिर्माण को एक ठोस वैचारिक आधार प्रदान किया। वे मात्र एक राजनीतिज्ञ नहीं थे—वे झारखण्ड की आत्मा के स्वर, उसकी सांस्कृतिक चेतना के वाहक और सामाजिक न्याय के अनथक प्रहरी थे। उनके व्यक्तित्व में नेतृत्व का ओज, संवेदना की गहराई और जन-जन से जुड़ने की अद्‌भुत क्षमता समाहित थी। ऑक्सफोर्ड से शिक्षा प्राप्त जयपाल सिंह मुण्डा ने वैश्विक बौद्धिक दृष्टि और स्थानीय जीवनानुभव—दोनों को साधते हुए झारखण्डी अस्मिता को राष्ट्रीय पटल पर एक नई प्रतिष्ठा दिलाई। आदिवासी समाज की गरिमा, अधिकार और अस्तित्व को उन्होंने केवल राजनीतिक मुद्दा नहीं बनने दिया, बल्कि उसे एक सांस्कृतिक आंदोलन का स्वरूप प्रदान किया। 'झारखंड पार्टी' के माध्यम से उन्होंने आदिवासी समुदाय के अधिकारों, पहचान और स्वायत्तता की मांग को लोकतांत्रिक विमर्श का हिस्सा बनाया। उनका जीवन-दर्शन प्रकृति, मनुष्य और समाज के संतुलित सह-अस्तित्व पर आधारित था। वे मानते थे कि जंगल, जमीन और जल केवल संसाधन नहीं, बल्कि एक जीवन-परंपरा हैं जिन्हें संरक्षित रखना सभ्यता की नैतिक जिम्मेदारी है। खिलाड़ियों के रूप में हॉकी के अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारत को गौरवान्वित करने वाले जयपाल सिंह अनुशासन, संघर्ष और प्रतिबद्धता के प्रतीक थे—और यही गुण उनके राजनीतिक व सामाजिक नेतृत्व में भी परिलक्षित होते हैं। आज भी झारखण्ड की राजनीति, समाज और संस्कृति में उनकी विचारधारा प्रेरणा का स्रोत है। उनकी दूरदृष्टि ने झारखण्डी पहचान को मज़बूत किया, सामाजिक न्याय को दिशा दी और सांस्कृतिक पुनर्जागरण की राह प्रशस्त की। निस्संदेह, जयपाल सिंह मुण्डा झारखण्ड के इतिहास में एक जीवंत विचारशक्ति के रूप में सदैव स्मरणीय रहेंगे।

**कुंजी शब्द :** जयपाल सिंह मुण्डा, जनजातीय चेतना, झारखण्ड पार्टी

## अध्ययन की पृष्ठभूमि :

किसी देश या समाज की वैचारिकी उसके महान व्यक्तित्वों के गौरवशाली योगदानों से आकार लेती है। ये योगदान केवल ऐतिहासिक घटनाएँ नहीं होते, बल्कि पीढ़ियों को दिशा देने वाली स्थायी प्रेरणाएँ बन जाते हैं। ऐसे महापुरुष अपने विचार, संघर्ष और आदर्शों के माध्यम से एक वैचारिक धरोहर निर्मित करते हैं, जो समाज को समय-समय पर मार्गदर्शन प्रदान करती है। उनकी आकांक्षाएँ आने वाली पीढ़ियों के सपनों को आकार देती हैं और उनके आदर्श मूल्य-निर्माण का आधार बनते हैं। इसलिए, इन महान व्यक्तित्वों पर समकालीन परिप्रेक्ष्य में निरंतर अध्ययन होना अत्यंत आवश्यक है। इससे नई पीढ़ी को अपने इतिहास और विरासत की सशक्त जानकारी मिलती है, वहीं समाज भी बदलते समय में सही दिशा तय करने के उपाय खोज पाता है। इस प्रकार ऐसे अध्ययन भविष्य के मार्गदर्शन और वर्तमान की वैचारिक स्पष्टता—दोनों के लिए अनिवार्य होते हैं। उपरोक्त पृष्ठभूमि में यह शोध-पत्र एक सार्थक प्रयास है जो झारखण्ड राज्य के जयपाल सिंह मुण्डा के जीवन एवं दर्शन के विविध पक्षों का ऐतिहासिक विवरण प्रस्तुत करते हुए वर्तमान समय इसकी प्रासंगिकता का पड़ताल करता है ।

## जयपाल सिंह मुण्डा का जीवन :

उन्नीसवीं सदी का भारत गहरे सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक परिवर्तन से गुजर रहा था। एक ओर अंग्रेजी शासन अपनी पकड़ मजबूत कर रहा था, तो दूसरी ओर समाज के भीतर परंपरा और नवजागरण के बीच एक मूक संघर्ष चल रहा था। शिक्षा, सामाजिक सुधार, आधुनिक विचारों और औपनिवेशिक नीतियों के बीच भारत का जनजीवन नए-पुराने मूल्यों की खींचतान में उलझा हुआ था। ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में तो स्थितियाँ और भी कठिन थीं—विकास की कमी, प्रशासनिक उपेक्षा, संसाधनों पर बाहरी हस्तक्षेप और सांस्कृतिक पहचान पर दबाव लगातार बढ़ रहा था। समाज में विषमता गहरी थी और आदिवासी समुदाय विशेषकर आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक रूप से हाशिये पर थे। इन्हीं चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों, उपेक्षा और सीमित अवसरों के बीच 3 जनवरी 1903 को जयपाल सिंह मुंडा का जन्म खूंटी के टकरा पाहनटोली में हुआ। उनके पिता अमरू पाहन और माता राधामणी एक साधारण कृषक परिवार से थे, और बाल्यकाल में उन्हें *प्रमोद पाहन* नाम से पुकारा जाता था।

जयपाल सिंह मुंडा की प्रारंभिक शिक्षा उनके पैतृक गाँव की मिट्टी, जीवन-संस्कारों और सामुदायिक परिवेश से शुरू हुई। बालक *प्रमोद पाहन* के रूप में उन्होंने स्थानीय परंपराओं की उजास में सीखने की पहली यात्रा आरंभ की। बाद में ईसाई धर्म स्वीकार करने पर 1910 में उन्हें रांची के चर्च रोड स्थित एसपीजी मिशन द्वारा स्थापित सेंट पॉल हाई स्कूल में प्रवेश मिला। यहीं से उन्होंने 1919 में प्रथम श्रेणी में मैट्रिक उत्तीर्ण किया—और यहीं से उनका बौद्धिक क्षितिज नई दिशा में फैलने लगा। उनकी प्रतिभा ने शीघ्र ही बड़े संसार के द्वार खोले। 1920 में वे कैंटरबरी के सेंट अगस्टाइन कॉलेज पहुँचे और 1922 में ऑक्सफोर्ड के प्रतिष्ठित सेंट जॉन्स कॉलेज में उनका दाखिला हुआ। उत्कृष्ट शैक्षणिक पृष्ठभूमि और असाधारण क्षमताओं के कारण वे पहले आदिवासी बने जिन्हें भारतीय प्रशासनिक सेवा में चयनित होने का गौरव प्राप्त हुआ, यद्यपि हॉकी के प्रति उनके अनुराग ने उन्हें सिविल सेवा से त्यागपत्र देने के लिए प्रेरित किया। जयपाल सिंह मुंडा ने वर्ष 1931 में दार्जिलिंग में आयोजित एक ईसाई रीति-रिवाज़ के विवाह समारोह में तारा विएनफ्राइड मजूमदार से विवाह किया। तारा, पी. के. मजूमदार और जानकी एग्नेस पेनेलोप मजूमदार की पुत्री थीं, जो हेमांगिनी और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रथम अध्यक्ष डब्ल्यू. सी. बोनर्जी की बेटी थीं। तारा का पारिवारिक वंश राजनीतिक और बौद्धिक परंपराओं से समृद्ध था—वे जनरल जयंतो नाथ चौधरी की चचेरी बहन और कांग्रेस अध्यक्ष वोमेश चंद्र बोनर्जी की पोती भी थीं। तारा और जयपाल सिंह मुंडा के तीन संतानें जन्मीं—दो पुत्र, बीरेंद्र और जयंत, तथा एक पुत्री, जानकी। बाद के वर्षों में, मुंडा ने दूसरी शादी जहानारा जयरत्नम से की, जो श्रीलंका के एक तमिल परिवार से थीं और 1954 में भारतीय सिविल सेवा में शामिल हुईं। जहानारा और जयपाल सिंह के एक पुत्र हुए, जिनका नाम रणजीत जयरत्नम है।

खेल जगत में उनका व्यक्तित्व किंवदंती सा है। ब्रिटेन में 1925 में 'ऑक्सफोर्ड ब्लू' का सम्मान पाने वाले वे अपने समय के एकमात्र अंतरराष्ट्रीय भारतीय हॉकी खिलाड़ी थे। 1928 के ओलिंपिक में उनके नेतृत्व ने ही भारत को उसका पहला स्वर्ण पदक दिलाया—एक ऐसा गौरव जिसकी चमक आज भी भारतीय खेल इतिहास में अटल है। इंग्लैंड भेजे जाने का उद्देश्य भले ही उन्हें पादरी बनाना रहा हो, किंतु उन्होंने लौटकर इस मार्ग को अस्वीकार किया। जीवन ने उन्हें अनेक भूमिकाएँ दीं—कोलकाता में बर्मा सेल के कर्मचारी, रायपुर स्थित राजकुमार कॉलेज के प्रिंसिपल और बीकानेर नरेश के राजस्व मंत्री तक। लेकिन उनका वास्तविक आह्वान समाज-नेतृत्व में था। 1938 में उन्होंने आदिवासी महासभा की स्थापना की, और 1946 में खूंटी ग्रामीण क्षेत्र से चुनाव जीतकर संविधान सभा के सदस्य बने। 1949 में झारखण्ड पार्टी की स्थापना किया, 'लोबीर सेन्द्रा' और 'आदिवासिज़्म' उनकी दो महत्त्वपूर्ण कृतियाँ हैं, जिनमें उनके विचारों का स्वर आज भी गूंजता है। 20 मार्च 1970 को दिल्ली स्थित उनके आवास पर सेरेब्रल हैमरेज के कारण उनका निधन हुआ। परंतु उनका जीवन, संघर्ष और विचारधारा आज भी झारखंड की चेतना में एक अमिट प्रकाश की तरह विद्यमान है।

**जयपाल सिंह मुण्डा का जीवन दर्शन :**

किसी व्यक्ति का जीवन-दर्शन उसकी समय-परिस्थितियों, अनुभवों और सामाजिक परिवेश से ही निर्मित होता है। मनुष्य जिन हालातों में जन्म लेता है, जिन संघर्षों का सामना करता है और जिन मूल्यों को अपने आसपास फलते-फूलते देखता है, वही तत्व उसकी सोच, दृष्टि और आदर्शों की दिशा निर्धारित करते हैं। समय की चुनौतियाँ उसे सजग बनाती हैं, अवसर उसकी संवेदना को गहराई देते हैं, और समाज की वास्तविकताएँ उसे जीवन के गूढ़ सत्य सिखाती हैं। इस प्रकार जीवन-दर्शन कोई आकस्मिक जन्मा विचार नहीं, बल्कि युग, परिवेश और व्यक्तिगत अनुभवों का परिपक्व सार होता है, जो व्यक्ति के कर्म, संघर्ष और व्यक्तित्व में स्वाभाविक रूप से झलकता है। इसी संदर्भ में, जयपाल सिंह मुण्डा के जीवन-दर्शन को समझने के लिए उनके समय की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों को जानना अत्यंत आवश्यक है। उन परिस्थितियों से उपजा उनका संघर्ष ही बाद में उनकी वैचारिकी और नेतृत्व-दृष्टि की आधारशिला बना, जिसने झारखंड और आदिवासी समाज की पहचान को एक नई दिशा प्रदान की। अत्यंत ग्रामीण पृष्ठभूमि और साधारण परिवार में जन्म, अध्ययन में रुचि और ईसाई मिशनरियों से मिली सहायता, खेल के प्रति स्वाभाविक झुकाव से वैश्विक मंच तक पहुँचने की अद्भुत यात्रा; ब्रिटिश राज द्वारा थोपी गई परिस्थितियों के बीच अपने देश, राज्य और समाज के लिए स्वयं को तैयार करना; जनजातीय संस्कृति, मानवाधिकार और सामाजिक न्याय के लिए जीवनपर्यंत संघर्ष करना—यही वे सूत्र हैं जिनसे जयपाल सिंह मुण्डा के व्यक्तित्व और जीवन-दर्शन की बुनियाद तैयार होती है। ब्रिटिश शासन द्वारा थोपी गई सामाजिक-राजनीतिक

परिस्थितियों ने उनके भीतर अपने देश, राज्य और समाज के लिए कुछ बड़ा करने का संकल्प पैदा किया। जिन आदिवासी समाज से वे आए थे, उसकी संस्कृति, गरिमा, जल-जंगल-जमीन का अधिकार और मानवाधिकार उनके जीवन-दर्शन के मूल तत्व बन गए। उन्होंने सामाजिक न्याय, आदिवासी पहचान और स्वायत्तता के लिए जीवनभर संघर्ष किया।

जयपाल सिंह मुण्डा के जीवन का प्रारंभिक आधार उनका खेल बना। खेल न केवल उनके लिए आजीविका का साधन था, बल्कि देश का प्रतिनिधित्व करने का एक गौरवपूर्ण अवसर भी। हॉकी की दुनिया में उनकी अंतरराष्ट्रीय ख्याति उनकी प्रतिभा, अनुशासन और अद्वितीय नेतृत्व क्षमता का प्रमाण है। खेल जीवन के उपरांत उन्होंने स्वयं को अनेक भूमिकाओं में स्थापित किया—एक शिक्षक, एक पत्रकार, एक राजनेता और एक मानवाधिकार कार्यकर्ता के रूप में। प्रत्येक मंच पर उन्होंने अपनी प्रतिबद्धता, स्पष्ट दृष्टि और सामाजिक संवेदना के साथ उल्लेखनीय पहचान बनाई। शिक्षा के प्रति उनका दृष्टिकोण अत्यंत प्रगतिशील था। वे शिक्षा को मानव-मुक्ति और सामाजिक उन्नति का सबसे प्रभावी साधन मानते थे। उनका शैक्षिक नजरिया प्रसिद्ध अमेरिकी दार्शनिक एवं शिक्षाविद् जॉन ड्यूई के अनुभववादी शिक्षण सिद्धांतों तथा भारत के डॉ. भीमराव अम्बेडकर की "शिक्षा से सामाजिक न्याय" की अवधारणा के निकट दिखाई देता है। वे मानते थे कि शिक्षा व्यक्ति को केवल विद्वान नहीं बनाती, बल्कि उसे अधिकार-सचेत, आत्मसम्मान से पूर्ण और समाज में समानता के लिए संघर्ष करने योग्य बनाती है।

जयपाल सिंह मुण्डा भलीभाँति जानते थे कि आदिवासी और गैर-आदिवासी समाज के बीच बनी गहरी खाई ने न केवल आदिवासी समुदाय को लंबे समय तक दमित और उपेक्षित रखा, बल्कि उनके मूलभूत अधिकारों के साथ निरंतर खिलवाड़ भी किया। ब्रिटिश शासन से लेकर स्वतंत्र भारत के प्रारंभिक काल तक आदिवासी समाज किसी सशक्त राजनीतिक प्रतिनिधित्व से वंचित था। ऐसी परिस्थिति में वे एक अत्यंत प्रभावशाली और दूरदर्शी नेता के रूप में उभरे, जिन्होंने आदिवासी अस्मिता, अधिकार और गरिमा की रक्षा को अपने जीवन का ध्येय बना लिया। इन्हीं संघर्षों के क्रम में उन्होंने 1938 में *आदिवासी महासभा* की स्थापना की—एक ऐसा मंच जो आदिवासी समाज की आवाज़ को राष्ट्रीय स्तर पर पहुंचाने का माध्यम बना। उनका दृढ़ विचार था कि आदिवासी समुदाय को अपनी सांस्कृतिक विशेषताओं और प्राकृतिक अधिकारों के संरक्षण हेतु राजनीतिक स्वायत्तता मिलनी चाहिए। इसी भावना से प्रेरित होकर उन्होंने अलग राज्य—झारखंड—की मांग को स्पष्ट रूप में उठाया। उनका यह प्रयास केवल राजनीतिक पहल नहीं था, बल्कि आदिवासी आत्मसम्मान, अस्तित्व और पहचान को भविष्य के लिए सुरक्षित रखने का एक ऐतिहासिक कदम था।

अपनी बहुमुखी प्रतिभा, व्यापक दृष्टि और समाज के एक बड़े वर्ग के मुखर नेतृत्वकर्ता होने के कारण जयपाल सिंह मुण्डा 1946 में भारत की संविधान सभा के लिए चुने गए—वह ऐतिहासिक मंच जहाँ स्वतंत्र भारत के भविष्य की रूपरेखा तैयार की जानी थी। यह चयन केवल एक व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं, बल्कि आदिवासी समाज की आकांक्षाओं, पीड़ाओं और अधिकारों को राष्ट्रीय विमर्श में स्थान दिलाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था। संविधान सभा में उनके विचार अद्भुत स्पष्टता और साहस से भरे थे। अपनी संस्कृति, पहचान और समुदाय के हक में बोलते हुए उन्होंने बिना किसी झिझक कहा कि एक आदिवासी होने के नाते उनसे संवैधानिक प्रावधानों की जटिलताओं को समझने की अपेक्षा नहीं की जाती, लेकिन उनकी सामान्य बुद्धि यह अवश्य कहती है कि स्वतंत्रता के मार्ग पर सभी को समान रूप से चलना होगा और सामूहिक संघर्ष ही देश को आगे ले जाएगा। सभा में दिया गया उनका वक्तव्य केवल एक भाषण नहीं, बल्कि आदिवासी इतिहास की सदियों पुरानी पीड़ा और संघर्ष का मार्मिक दस्तावेज था। उन्होंने निर्भीक होकर कहा कि यदि भारत के किसी भी समुदाय के साथ सबसे बुरा व्यवहार हुआ है तो वह उनके लोग हैं—वे लोग जिन्हें 6000 वर्षों से अपमानित, उपेक्षित और बेदखल किया गया। उन्होंने याद दिलाया कि सिंधु घाटी सभ्यता, जिसके वे वंशज हैं, से आदिवासी समुदाय को तथाकथित नवागत समूहों द्वारा खदेड़कर जंगलों में धकेल दिया गया, और उनका पूरा इतिहास शोषण, संघर्ष और विस्थापन की असंख्य घटनाओं से भरा है। फिर भी, इस गहरे ऐतिहासिक अन्याय के बीच उन्होंने आशा की लौ को जीवित रखा। पंडित जवाहरलाल नेहरू और संविधान सभा के सदस्यों पर विश्वास जताते हुए उन्होंने कहा कि स्वतंत्र भारत का नया अध्याय समान अवसरों, सम्मान और समावेश पर आधारित होना चाहिए—एक ऐसा राष्ट्र जहाँ कोई भी नागरिक उपेक्षित न रहे। उनका यह वक्तव्य भारतीय लोकतंत्र और सामाजिक न्याय की बुनियाद में आज भी एक जीवंत मूल्य के रूप में विद्यमान है।

झारखंड पार्टी की स्थापना उनकी उस जीवन-मान्यता से सीधे जुड़ी थी कि बिना स्वतंत्र राजनीतिक अस्तित्व के आदिवासी समाज अपने वाजिब अधिकारों को प्राप्त नहीं कर सकता। उनके विचार में राजनीतिक प्रतिनिधित्व के अभाव में आदिवासी अस्मिता और अधिकार लगातार उपेक्षित रहेंगे। इसलिए, आदिवासी महासभा के गठन के बाद जब 1949 में झारखंड पार्टी (झापा) की स्थापना हुई, तो इसने न केवल आदिवासी समाज के राजनीतिक प्रतिनिधित्व का मार्ग प्रशस्त किया, बल्कि झारखंड राज्य के निर्माण के प्रति उनके विश्वास को भी नई मजबूती प्रदान की। झारखंड पार्टी अलग झारखंड राज्य की मांग के उद्देश्य से बनी थी। पार्टी ने 1952, 1957 और 1962 के बिहार विधानसभा चुनावों में भाग लिया और शुरुआती वर्षों में उल्लेखनीय प्रभाव छोड़ा। 1952 में 325 में से 34 सीटें जीतकर यह बिहार में कांग्रेस के विरुद्ध प्रमुख विपक्षी दल के रूप में उभरी। 1955 में पार्टी ने राज्य पुनर्गठन आयोग को अलग राज्य की मांग का ज्ञापन सौंपा, पर भाषाई विविधता और आर्थिक आधारों को कारण बताकर प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया गया। 1962 के

चुनाव में पार्टी 20 सीटों के साथ अब भी प्रभावशाली थी, पर धीरे-धीरे परिस्थितियाँ प्रतिकूल होती गईं। अलग राज्य की मांग के बार-बार खारिज होने और संगठन की कमजोर पड़ती स्थिति ने जयपाल सिंह मुण्डा को निराश किया। अंततः 1963 में झारखंड पार्टी का कांग्रेस में विलय कर दिया गया।

**निष्कर्ष**

जयपाल सिंह मुण्डा के जीवन और दर्शन की प्रासंगिकता आज के झारखंड, भारत और वैश्विक परिदृश्य—तीनों में अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनका जीवन केवल ऐतिहासिक घटनाओं से निर्मित नहीं, बल्कि मानवाधिकार, सांस्कृतिक अस्मिता, सामाजिक न्याय और संवैधानिक मूल्यों को केंद्र में रखने वाली दूरदर्शी विचारधारा का जीवंत दस्तावेज है। आज जब आदिवासी समुदाय भूमि-अधिकार, विस्थापन, संसाधनों तक पहुँच, सांस्कृतिक संरक्षण और प्रतिनिधित्व जैसे प्रश्नों से जूझ रहा है, जयपाल सिंह का दर्शन हमें यह समझने की दिशा देता है कि विकास तभी सार्थक है जब वह स्थानीय लोगों की पहचान, गरिमा और भूमि-संबंध से जुड़ा हो। उनकी "जल–जंगल–जमीन" संबंधी दृष्टि आज के पर्यावरणीय संकट, जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक संसाधनों के दोहन के संदर्भ में और अधिक प्रासंगिक हो गई है। वे इस बात पर जोर देते थे कि प्रकृति और मनुष्य परस्पर सहचर हैं और दोनों के बीच संतुलन ही सतत विकास का मार्ग है। राजनीतिक प्रतिनिधित्व के संदर्भ में भी उनका दर्शन अत्यंत मूल्यवान है। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा था कि लोकतंत्र तभी सशक्त होगा जब समाज का हर वर्ग—विशेषकर हाशिए पर खड़े समुदाय—निर्णय प्रक्रिया में भागीदार बनेंगे। वर्तमान समय में आदिवासी अधिकारों, आरक्षण, स्थानीय नीतियों और स्वशासन से संबंधित बहसों में उनका विचार मार्गदर्शक सिद्ध होता है। शिक्षा के प्रति उनका दृष्टिकोण आज के शैक्षिक असमानता के इस दौर में विशेष रूप से प्रासंगिक है। वे शिक्षा को सामाजिक समानता, जागरूकता और आत्मसम्मान का साधन मानते थे—एक ऐसा दृष्टिकोण जो आज भी शिक्षा नीति और सामाजिक सुधार के केंद्र में होना चाहिए।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. महेंद्र, आर. (2022, मार्च 20). *जयपाल सिंह मुंडा, जिन्होंने कहा था– मुझे आदिवासी होने पर गर्व है.* फ़ॉरवर्ड प्रेस.
2. मीणा, बी. एल. (2021). *आदिवासी चेतना के नायक जयपाल सिंह मुंडा.* इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज़ एंड सोशल साइंस इन्वेंशन, 10 (11), 74–75.
3. दत्त, बी. (2017). जयपाल सिंह एक रोमांचक अनकही कहानी. प्रभात पेपर बैक्स, नई दिल्ली ,27-38.
4. पंकज,ए.के.(2022). *अदिवासिदोमः सिलेक्टेड राईटिंग्स एंड स्पीचेस ऑफ जयपाल सिंह मुंडा.* प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली , 20-22.
5. किरो, एस(2018). *द लाइफ एंड टाइम्स ऑफ जयपाल सिंह मुंडा.* प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 05-10.